''राजस्थानी संस्कृति एवं त्यौहारों में निहित मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता''

रश्मि कुमावत **डॉ प्रेमलता गाँधी**

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डिम्ड)
विश्वविद्यालय प्रतापनगर उदयपुर

प्रस्तावना

''शिक्षा के लक्ष्य समाज की मौजूदा महत्वाकांक्षाओं व जरूरतों के साथ शाश्वत मूल्यों तथा समाज के तत्कालिक सरोकारों सहित वृद्ध मानवीय आदर्शों को भी प्रतिम्बिबित करते है। किसी भी खास समय व स्थान के संदर्भ में इन्हें व्यापक व शाश्वत मानवीय आकांक्षाओं व मूल्यों के समकालिन व प्रासंगिक अभिव्यक्ति कहा जा सकता है।''

-N.C.F.-2005

मानव एक सामाजिक प्राणी है उसके मूल्य, उसके गुण उसकी सत्प्रवृत्तियां ही उसे पशु व वनस्पति जगत से भिन्न बनाते है। जीवन व मूल्यों में मणि कांचन संयोग है, जिस प्रकार जल बिना मछली, आत्मा बिना शरीर व भाषा बिना मनोगत भाव महत्वहीन है, उसी प्रकार मूल्यों के बिना जीवन अर्थहीन हैं।

मूल्य मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। यह मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण वस्तु का प्रतिनिधित्व करते है। मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना व वरीयता प्रकट करता है। यह एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुणों का समावेश है, जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली तथा विश्वसनीय बनकर उभरता है। मूल्य में मानव की धारणाएं, विचार, विश्वास, मनोवृति एवं आस्था आदि अन्त निहित होते है। मूल्यवान एवं मूल्यहीन होना ही प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता एवं उपयोगहीनता को सिद्ध करता है। मूल्य के महत्व को प्रत्येक अवस्था में स्वीकार किया जाता है।

''राजस्थानी संस्कृति एवं त्यौहारों में निहित मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता''

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य के निम्न उद्देश्य है :–

1. संविधान में निहित मूल्यों पर आधारित कथा कहानियों को पता लगाना।
2. आयोग के उल्लेखित त्योहारों व सांस्कृति संबंधित मूल्यों की जानकारी प्राप्त करना।
3. राजस्थान राज्य से संबंधित संस्कृति एवं त्योहारों संबंधित कथा कहानियों का पता लगाना।
4. आयोगों में उल्लेखित त्योहारों व संस्कृति संबंधित मूल्यों की जानकारी प्राप्त कर उनकी वर्तमान में प्रासंगिकता।
5. राजस्थान राज्य से संबंधित संस्कृति एवं त्योहारों संबंधित कथा कहानियों में निहित मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता।

शब्द पारिभाषिकरण

- कहानी
- मूल्य
- संस्कृति
- पर्व/त्यौहार

(i) **कहानी–** ऐसी कहानियाँ जिनका कोई लिखित रुप नहीं हैं। दादा–दादी एवं नाना–नानी द्वारा बच्चों को सुनाई जाती है और ये कहानियाँ विभिन्न नैतिक, सामाजिक, वैश्विक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक आदि मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत होती हैं।

(ii) **मूल्य–** समाज के जीवन दर्शन पर आधारित प्रतिमानों को ही मूल्य कहते हैं। मूल्यों की अवधारणा प्रत्येक दर्शन के अनुसार अलग–अलग होती हैं। मूल्य एक ऐसा आचार संहिता है जिसमें मानव की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि अन्तःनिहित होते हैं।

(iii) **संस्कृति –** समूह के विश्वासों, आदर्शों, विचारों, व्यवहारोकं रीति–रिवाजों आदि व्यवहार के अनेक उपकरणों एवं साधनों को संस्कृति कहते हैं।

(iv) **पर्व/त्योहार –** धार्मिक एवं जातीय उत्सव। हमारे देश के त्योहार, हमारे पर्व, मनुष्य के भावनात्मक विकास में सदैव सहभागी रहे हैं। ये त्योहार करुणा, दया, सरलता, आतिथ्य सत्कार, पास्परिक प्रेम एवं सद्भावना तथा परोपकार जैसे नैतिक गुणों का मनुष्य में विकास करते हैं । इन्हीं नैतिक मूल्यों की अवधारणा से मनुष्य को चारित्रिक अथवा भावनात्मक बल प्रदान होता है।

विधि प्रविधि एवं उपकरण

शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने अनुसंधान हेतु निम्न शोध विधि प्रयोग में ली गईः–

1. **आदर्श मूलक सर्वेक्षण–** राजस्थान राज्य से संबंधित संस्कृति एवं त्योहारों संबंधित कथा कहानियों का सर्वेक्षण करेंगे।
2. **ऐतिहासिक विधि–** राजस्थान राज्य में संस्कृति एवं त्योहारों पर कही जाने वाली कहानियों से संबंधित साहित्य के माध्यम से मूल्यों का पता लगाना।

उपकरण

- राजस्थान के विभिन्न पर्वों एवं त्योहारों का सर्वे के माध्यम से कहानियों का पता लगाना।
- इसमें साक्षात्कार भी किये जाऐगें। कहानी कहने वाले विद्वानों एवं विदुषी महिलाओं तथा श्रोताओं को साक्षात्कार में सम्मिलित किया जाएगा।
- राजस्थान के विभिन्न संभागों की संस्कृति के त्योहारों की कहानियों द्वारा मूल्यों का पता लगाया जाएगा।

न्यादर्श

- यह राजस्थान के पर्वों पर कही जाने वाली कहानियों तक सीमित रखा जाएगा।
- यह विभिन्न आयोगों में वर्णित मूल्य शिक्षा तक सीमित किया जाएगा।

परिसीमन/सीमाएँ

- यह अनुसंधान राजस्थान राज्य तक सीमित है।
- यह केवल राजस्थान की संस्कृति पर्वों एवं त्योहारों तक सीमित है।
- राजस्थानी संस्कृति में (कहानियों द्वारा) निहित मूल्य का वर्णन है।
- यह विभिन्न आयोगों में निहित मूल्यों तक सीमित है।

संमक संकलन की विधि

- समस्त राजस्थानी पर्वों एवं त्यौहारों से संबंधित कहानियों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि अपनाई जाएगी।
- कहानियों का संकलन प्राचीन ग्रंथों में लिखित एवं वर्णित पर्वों एवं त्योहारों का पता लगाया जाएगा।
- विभिन्न ऐतिहासिक स्त्रोतों से भी मूल्यों की जानकारी प्राप्त की जाएगी।

परिकल्पना

ऐतिहासिक शोध अध्ययनों में परिकल्पनाओं का निर्माण प्रायः नहीं किया जाता हैं।

शोध अध्ययन का महत्व

(i) समय और आर्थिक संसाधनों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध को शैक्षिक विचारों का सीमांकन किया गया है।

(ii) शिक्षा से जुड़े अनेक पहलुओं का बारीकी से अध्ययन किया और एक सफल शिक्षक की दक्षता व कौशल हासिल किया जा सके।

(iii) प्रस्तुत अध्ययन शिक्षाविदों के लिए महत्वपूर्ण साबित होना चाहिये ऐसा अध्ययनकर्ता का मानना है। वर्तमान शिक्षा के अर्थ एवं स्वरूप तथा शिक्षा के उद्देश्यों, विद्यालय के स्वरूप इत्यादि में मूल्यों को यथासम्भव समाज हितोपयोग हेतु वर्तमान शिक्षा में लागू कर सकते है।

(iv) यह अध्ययन शिक्षकों के लिए महत्व रखता है, शिक्षक उनके अनुसार अपने को ढ़ालकर एक आदर्श व सफल शिक्षक बन सकता है।

(v) विद्यार्थी की जो संकल्पना की है, विद्यार्थियों को उसके अनुरूप आचरण कर जीवन में सफलता अर्जित करनी चाहिए।

(vi) चिन्तकों के लिए भी प्रस्तुत समस्या अध्ययन महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। चिन्तक इसके माध्यम से अपने चिन्तन को नयी दिशा दे सकते है। पाठ्यक्रम में राजस्थानी संस्कृति एवं त्योहारों में निहित मूल्यों को जोड़कर महाविद्यालयी संबंधी योजना, दार्शनिक विचार आदि पर चिन्तन कर इन्हें समाजहितोपयोगी बनाया जा सकता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से सम्बंधित विचारों में पाठ्यक्रम निर्माण में मूल्य शिक्षा को अपना कर इनके वर्तमान स्वरूप में गुणवत्ता लायी जा सकती है। स्कूलों के पाठ्यक्रम में मूल्यों को जोड़ने से महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय सम्बन्धी वर्तमान समाज हेतु सार्थक व बोधगम्य प्रतीत होते है।

(vii) विद्यालयों को ज्ञान का केन्द्र कहा है। अतः विद्यालयी सम्बंधी अनेक विचार भी वर्तमान समय में महत्वपूर्ण है।

(viii) शिक्षा प्रशासक मूल्य शिक्षा के शैक्षिक विचारों को अमलीजामा पहनाकर वर्तमान शिक्षा में गुणवत्ता ला सकते है। शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विद्यालय, शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बंध, शिक्षण–प्रणाली आदि महत्वपूर्ण विचारों को वर्तमान शिक्षा में लागू कर शैक्षिक निष्पत्ति में वृद्धि की जा सकती है। शिक्षा तथा सामाजिक संगठनों के लिए भी प्रस्तुत अध्ययन महत्वपूर्ण हो सकता है।

शोध के निष्कर्ष

इस अध्ययन समस्या का अध्ययन करने से कुछ ऐसे तथ्य सामने आये है, जिन पर यदि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अमल किया जाये तो हम निश्चय ही मानव केन्द्रित सुसभ्य विकसित समाज का निर्माण कर सकते है। मूल्य शिक्षा का महानतम उद्देश्य मानव के आत्मिक उन्नयन व शील निर्माण का माना ताकि उनके ज्ञान का उपयोग समाजहित में हो सके।

त्योहारों एवं अयोगो के मूल्य के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थी निम्नलिखित निष्कर्षो पर पहुँची है–

1. मूल्यों को शिक्षा जीवन से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि शिक्षा से मनुष्यता व शान्ति दोनों मिलती है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु समान है।
2. शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को केवल अक्षर ज्ञान कराना ही नहीं होना चाहिए बल्कि उसका आत्मिक उन्नयन, सामाजिक एवं मानवीय गुणों का विकास, बौद्धिक विकास चरित्र एवं शील निर्माण तथा नैतिक मूल्यों का विकास करना होना चाहिए।
3. मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों में सामाजिक समानता लोकतांत्रिक भावना, राजनैतिक चेतना एवं नैतिक मूल्यों का विकास करने वाले पाठ्यक्रम की सिफारिश करते प्रतीत होते है।
4. विद्यालय को लघु समाज मानते थे। इसलिए विद्यालय में स्वतंत्रता समता भ्रातृत्व व लोकतांत्रिक वातावरण पर बल दिया। क्योंकि आज के विद्यार्थी ही कल के नागरिक होंगे जो कि एक समतावादी समाज की स्थापना कर सकेंगे।
5. शिक्षक के विषय मे कहा है कि शिक्षक को ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थी की आवश्यकता को पिता की भांति समझे। वह सभी विद्यार्थियों को बिना भेदभाव के शिक्षा दे तथा विद्यार्थियों से आत्मीयता बनाये रखे। उसमें नैतिक गुणों का समावेश होना चाहिए।
6. मूल्य शिक्षा शिक्षार्थी को जिज्ञासु, ज्ञान पिपासु, चिन्तनशील होने पर बल देते हैं।
7. मूल्यों की शिक्षा को रोजगार परक बनाने पर बल दिया है।

8. त्योहारों एवं आयोगो के मूल्यों की शैक्षिक विचारों का गहन अध्ययन व विवेचन करने के उपरान्त उनके द्वारा वर्णित अनुकरणीय तथ्यों को वर्तमान शिक्षा में पर्याप्त महत्व दिया जाए यही अध्ययन का मुख्य शैक्षिक निहितार्थ है। अध्ययन के प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित है।

9. त्योहारों एवं आयोगों के मूल्यों के ज्ञान के सीमित उद्देश्यों से मुक्त होकर शिक्षा के नैतिक सामाजिक समानता, मानवीय गुण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने, भ्रातृत्व भावना का विकास आदि उद्देश्यों को महत्व दिया हैं वर्तमान समाज को अच्छा सुसंस्कृत बनाने हेतु विद्यालयों में यह लागू होनी चाहिए।

10. मूल्य शिक्षा द्वारा बालक में नैतिक मूल्यों का विकास, जैसे देश प्रेम, स्वतन्त्रता, समता, मनन, चिंतन, भ्रातृत्व की भावना आदि का विकास तथा शील निर्माण पर बल दिया है। वर्तमान में इनको बालक के आचरण में डालकर बालक को सुसभ्य व समाजोपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है।

11. महिला में मूल्य शिक्षा पर विशेष बल दिया तथा स्त्री स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए संविधान में भी प्रावधान किया। वर्तमान में इन पर अमल करके स्त्रियों को समाज के विकास में भागीदार बनाया जा सकता है।

12. विद्यालयों को बारहखड़ी सिखाने का स्थान मात्र नहीं मानते है बल्कि बच्चों के मन को सुसंस्कारित व समाजपयोगी बनाने का पवित्र स्थल मानते है। मूल्य शिक्षण द्वारा विद्यालय स्वरूप को अपनाकर विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में गुणवत्ता लाई जा सकती है। तथा विद्यालयों को संस्कार केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

13. त्यौहारों में निहित मूल्यों को पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचारों को अपनाकर वर्तमान शिक्षा को रोजगारोन्मुख, यान्त्रिक कृषि आधारित उद्योगों का विकास किया जा सकता है। साथ ही राष्ट्र के नवयुवकों को विवेकशील, लोकतांत्रिक भावना से ओत–प्रोत व अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है।

14. शिक्षकों को मूल्य शिक्षा के विचारों से प्रेरणा लेकर नैतिक मूल्यों व मानवीय गुणों को आचरण में लाना चाहिए।

15. मूल्यों की शिक्षा विद्यालयी जीवन में राजनीति से दूर रहने तथा अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करने का संदेश देते है। जिसकी वर्तमान विद्यार्थियों को आवश्यकता है।

16. सभी धर्मों के मूल्यों को सर्वधर्मी के रूप में प्रतिपादित करते हुए राज्याश्रय में इनके पठन–पाठन और धारण–अवधारण के ईमानदारी से प्रयास होने चाहिए।

17. हमारे प्राथमिक पाठ्यक्रम से लेकर विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों तक प्रत्येक अनुशासन, संकाय में इन मूल्यों से सम्बंधित जीवनोपयोगी पुस्तकों का संचालन हो और उनके मूल्यांकन की व्यवस्था हो।

18. मूल्यों के रेशम के धागों में प्राणी मात्र को बांधने के पूरे संवेदनशील प्रयास किए जाने चाहिए। इस हेतु निहित मूल्यों का प्राथमिकता से चयन किया जाना चाहिए।

19. मूल्य मौखिक न होकर ग्राह्य व धारणीय हो और क्लिष्ट विषयों को सामकालिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रतिपादित किया जाए।

20. मूल्य आदर्श जीवन की सैद्धान्तिक ही नहीं व्यावहारिक बात करता है।

21. मूल्यों के कारण ही मनुष्य जीवन धर्म सागर सी गंभीरता का धनी रहा है और इसलिए यह अन्य धर्मो के प्रति भी अतीव उदार है।

भावी शोधकर्ता हेतु सुझाव

कहानी तथा कथाओं के माध्यम से भविष्य में निम्नलिखित विषयों पर शोधकार्य किया जा सकता है–

(i) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में कहानी तथा कथाओं के माध्यम से मूल्य संवर्धन।
(ii) कहानी तथा कथा के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का संवर्धन।
(iii) कहानी तथा कथाओं के माध्यम से विडियो क्लिप या पिक्चर द्वारा मूल्य संवर्धन की प्रभावशीलता का अध्ययन।
(iv) शिक्षण की अन्य विधियों द्वारा कहानी तथा कथाओं के माध्यम से मूल्यों का विकास।
(v) कहानी तथा कथा के माध्यम से संविधान के अन्य मूल्यों का संवर्धन।
(vi) कहानी तथा कथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में अन्य विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन।
(vii) प्रस्तुत कहानी तथा कथाओं को व्यापक स्तर पर व्यापक न्यादर्श के साथ पुनः किया जा सकता है।
(viii) प्रार्थना स्थल पर शिक्षक को नैतिक शिक्षा व मूल्यों का ज्ञान देना चाहिए, छात्रों से नैतिकता परक कहानियाँ कहलवाना व राष्ट्रगान जैसी प्रवृत्ति को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए।
(ix) गीता में निहित मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन भी किया जा सकता है।
(x) जैन दर्शन एवं बौद्ध दर्शन के शैक्षिक मूल्य निहीतार्थ का अध्ययन भी किया जा सकता है।
(xi) प्रस्तुत शोधकार्य को अन्य ऐतिहासिक विधि को लेकर किया गया है। इसी शोधकार्य को अन्य प्रायोगिक विधि को लेकर भी किया जा सकता है।